सर्वहारा दृष्टिकोण

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) का मुखपत्र (पाक्षिक)

वर्ष-29 अंक-14 22 जुलाई से 5 अगस्त, 2014 मुख्य संपादक - कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती मूल्य : 2 रुपये

विश्व सर्वहारा के महान नेता
फ्रेडरिक एंगेल्स
लाल सलाम

20 नवम्बर, 1820– 5 अगस्त, 1895

''मौजूदा समाज की तमाम बुराइयों के आधार को बरकरार रखने की चाहत रखना और साथ ही साथ इन बुराइयों को दूर करने की चाहत रखना बुर्जुआ समाजवाद का सार है।

... जो लोग यह बात कहते हैं कि पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था और मौजूदा पूंजीवादी समाज के 'लौह जैसे कठोर' कायदे-कानून अलंघ्यनीय हैं, फिर साथ ही साथ यह उम्मीद भी करते हैं कि इस पूंजीवादी व्यवस्था के असुखकर लेकिन अनिवार्य परिणाम दूर हो जायें, उनके पास पूंजीपतियों को यह नैतिक उपदेश झाड़ने के सिवा और कोई उपाय नहीं है कि अच्छे बनो, जिसका भावनात्मक प्रभाव निजी स्वार्थ के प्रभाव से, अगर जरूरत पड़े तो प्रतिस्पर्धा के प्रभाव से तुरंत वाष्प बन कर लुप्त हो जाता है। ... . लगभग 50 साल से श्रम और पूंजी के स्वार्थों के बीच सामंजस्य का सुसमाचार प्रचारित करते आये हैं और इस सामंजस्य को सिद्ध करने के लिए तरह-तरह के 'माडल' प्रतिष्ठान निर्मित करके परोपकार के बुर्जुआ दृष्टिकोण से काफी पैसा खर्च किया गया है लेकिन इसके बावजूद वास्तव में 50 साल पहले हम जहाँ थे, आज भी वहीं के वहीं हैं।''

फ्रेडरिक एंगेल्स
(दि हाउसिंग क्वेश्चन)

सर्वहारा के महान नेता, इस युग के अग्रणी मार्क्सवादी चिंतनकार कॉमरेड शिवदास घोष की 38वीं मृत्यु वार्षिकी सम्मानपूर्वक मनायें

सर्वहारा के महान् नेता, इस युग के अग्रणी मार्क्सवादी चिन्तनकार व क्रान्तिकारी पार्टी एस.यू.सी.आई. (कम्युनिस्ट) के संस्थापक महासचिव कॉमरेड शिवदास घोष की 5 अगस्त 1976 को दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई थी। हम उनकी 38वां मृत्यु वार्षिकी मनाने जा रहे हैं। देश के मेहनतकशों के लिए जहां यह दिन बहुत ही शोक का दिन है वहीं पुनर्जागरण का भी दिन है। हर साल यह मौका एक खास मायने और खास महत्व के साथ आता है। इस साल 5 अगस्त एक ऐसे समय आ रहा है जब हाल ही में हुए लोकसभा चुनावों के परिणाम ने देश भर में प्रतिक्रिया के बोलबाले को प्रस्तुत किया है।

पूरी दुनिया के हालात विस्फोटक हैं। पूंजीवादी संकट मानव सभ्यता में जो कुछ उत्कृष्ट और महान था उसके वजूद

5 अगस्त, 1923– 5 अगस्त, 1976

को ही खतरे में डालते हुए अपनी बदतरीन सूरत में प्रकट हो रहा है। हर एक देश में आर्थिक संकट ने गंभीर रूप ले लिया है जो हर घड़ी लोगों को कंगाल बना रहा है और बहुसंख्यक लोगों को भुखमरी और मौत के मुंह में धकेल रहा है। अपने शासन को बरकरार रखने के लिए पूंजीपति-साम्राज्यवादी तरह-तरह की साजिशें रच रहे हैं, लोगों को महज छलने के लिए कभी-कभार कष्ट को वक्ती तौर पर हल्का कर देने वाले कुछ टोटके दे रहे हैं। लेकिन वे किसी काम के नहीं हैं क्योंकि वे पूंजीवाद की जड़ों को ही काट रहे हैं और बुनियाद को ही हिला दे रहे हैं। दरअसल पूंजीवाद एक अंधी गली में प्रविष्ट हो चुका है जिससे यह बाहर नहीं निकल सकता जिसके परिणामस्वरूप विश्व पूंजीवाद-साम्राज्यवाद के वजूद को ही खतरे में डालने वाले

(शेष पृष्ठ 7 पर)

भारतीय अर्थव्यवस्था का कारपोरेटीकरण करने वाले केन्द्रीय बजट 2014 की एसयूसीआई(सी) ने की निन्दा
इसे नामंजूर करने की देशवासियों से की अपील

एसयूसीआई(सी) के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने केन्द्रीय बजट 2014 के बारे में 10 जुलाई 2014 को निम्न बयान जारी किया :

मूलभूत क्षेत्रों में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) की आसान घुसपैठ, पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप (पीपीपी) के जरिये निजी पूंजी को बहुत सारे क्षेत्रों में इजाजत, मैन्यूफैक्चररों के लिए बिक्री कर और कस्टम ड्यूटी में बहुत सारी छूट-रियायतों और विशेष आर्थिक क्षेत्रों के 'पुनरुद्धार' के साथ बड़े-बड़े वायदों, नियमित आवंटनों और कलाबाजियों से भरा हुआ वित्तमंत्री अरुण जेटली द्वारा पेश किया गया आम बजट भारतीय अर्थव्यवस्था के कोरपोरेटीकरण का दस्तावेज है। निजीकरण की धूम इस हद तक मचायी गई है कि वित्तमंत्री ने खुद ही कहा है कि ''पीपीपी मार्केट में भारत दुनिया में पहले नम्बर पर है।'' प्रतिरक्षा जैसे नाजुक क्षेत्रों में 49 प्रतिशत विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) की इजाजत देकर देश की सुरक्षा से ही समझौता कर लिया गया है। विनिवेश के रास्ते बीमा क्षेत्र में इक्वीटी होल्डिंग में विदेशी प्रत्यक्ष निवेश (एफडीआई) सीमा को बढ़ा कर 49 प्रतिशत कर देना दरअसल नीति का एक उलटाव है क्योंकि प्राइवेट आपरेटरों के हाथों भारतीय बीमाकर्ताओं के जोखिम में पड़ जाने की स्थिति से बचाने के मद्देनजर तमाम निजी बीमा कम्पनियों का राष्ट्रीयकरण करके एक समय भारतीय एलआईसी बनाई गई थी। शेयरों की रिटेल बिक्री के जरिये सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के लिए पूंजी जुटाने की घोषणा राष्ट्रीयकृत बैंकों के विनिवेश के सिवा और कुछ नहीं है जिसका बहुत लम्बे अर्से से पहले ही देश के लोग प्रतिरोध करते आये हैं। विशेष आर्थिक क्षेत्रों का 'पुनरुद्धार' करने का सरकार का फैसला जिसका भद्दा अन्दरूनी पहलू अब जनता की जानकारी से छिपा नहीं है, यह संकेत करता है कि सरकार देशी-विदेशी बड़ी पूंजी को भारी छूट और रियायतें देने के लिए कितनी उत्सुक है। जैसा कि अक्सर होता आया, उसी तरह अत्यंत अनुत्पादनकारी मिलटरी बजट पिछली बार जहां 2.03 लाख करोड़ रुपये था, वहीं इस बार इसे बढ़ा कर 2.29 लाख करोड़ रुपये कर दिया गया है। अप्रत्यक्ष कर बढ़ा कर 7525 करोड़ कर दिया गये हैं जो आम लोगों को वहन करने पड़ेंगे। यह बजट रोजगार सृजन, परेशान करने वाली महंगाई को रोकने, लगातार बढ़ती मुद्रास्फीति पर लगाम लगाने, बिचौलियों को रास्ते से हटाने और गरीब किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी लाभकारी मूल्य देने आदि आम जनता से सम्बन्धित कुछ अत्यावशक मुद्दों पर सुस्पष्ट तौर पर चुप्पी साधे हुए है। इसने साफ-साफ यह भी नहीं बताया है कि घोषित टैक्स कटौती और शुल्क कटौती के फायदे बाकायदा अन्तिम उपभोक्ता तक पहुंचाये जाएंगे और मैन्यूफैक्चररों द्वारा नहीं 'चूस' लिये जाएंगे। हमें आशंका है कि खर्च सुधारों को देखने के लिए खर्च प्रबंधन आयोग बिठाने की घोषणा सब्सिडी कटौती और ऐसे ही अन्य जनविरोधी आर्थिक उपायों को रेल किरायों व अधिशुल्कों को खुद ही संशोधित करने की शक्तियों से लैस घोर निन्दनीय रेलवे टैरिफ अथोरिटी के नक्शेकदम पर संसद से बाहर तय करने और लागू करने की एक तरकीब है।

इसलिए बजट में, आम लोगों के लिए कोई भी 'दिशा सूचक कदम' नहीं है जिसका दावा वित्तमंत्री द्वारा किया गया है। तमाम सुझाव कारपोरेट क्षेत्र और औद्योगिक घरानों के हित में हैं जिनका मंगलभाषित नाम 'पूंजीनिवेशक' है। हमारा दृढ़ मत है कि यह तथाकथित सुधारमुखी बजट पूंजीवादी अर्थव्यवस्था का उपचार करने और इसे दोबारा पटरी पर लाने की बात तो दूर रही, उल्टे यह लोगों को और भी तबाह कर देगा क्योंकि एफडीआई की भरमार, निजीकरण की दावत, सट्टेबाजी और जुएबाजी को बढ़ावा देने के लिए पूंजीवादी बाजार सुधारों की रंगरलियों ने पश्चिम में एक के बाद दूसरे देश को बड़ी-बड़ी वित्तीय संस्थानों के पूर्ण दिवालियापन और ध्वंस पर पहुंचा दिया है।

जहां चैम्बर्स ऑफ कॉमर्स, बड़े-बड़े एकाधिकारी पूंजीपति और उनके ताबेदार अर्थशास्त्री-स्तम्भकार बीजेपी सरकार के इस बजट का स्तुतिगान कर रहे हैं, वहीं निर्मम पूंजीवादी आर्थिक दमन-उत्पीड़न की चक्की में पिस रहे देश के लोगों को इसे पूरी तरह से नामंजूर कर देना चाहिए और जनआन्दोलन के दबाव के तहत सरकार को जनहित के लिए नुकसानदेह वित्तीय और आर्थिक उपायों को वापस लेने के लिए बाध्य कर देना चाहिए।

जनविरोधी केन्द्रीय बजट 2014 के खिलाफ

देशभर में एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ने किये रोष प्रदर्शन

पटना (बिहार) : जनविरोधी आम बजट-2014 के खिलाफ 11 जुलाई को एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) पटना जिला कमिटी के तत्वावधान में रेडियो स्टेशन से विरोध प्रदर्शन किया गया। जुलूस रेडियो स्टेशन से निकला एवं फ्रेजर रोड, डाक बंगला रोड होते हुए स्टेशन चौक तक गया। पूरे रास्ते जनविरोधी आम बजट वापस लो, महंगाई पर रोक लगाओ, पी पी पी नीति लागू कर निजीकरण को बढ़ावा देना बंद करो, सार्वजनिक क्षेत्रों में एफडीआई पर रोक लगाओ, अच्छे दिन का वादा कहां गया मोदी सरकार जवाब दो जैसे गगनभेदी नारे लगाये जा रहे थे। जुलूस स्टेशन चौक पर पहुंच कर सभा में तब्दील हो गया।

सभा को संबोधित करते हुए नेताओं ने कहा कि सत्तासीन होने से पहले मोदी ने लोगों से वादा किया था अच्छे दिन लाने का, महंगाई पर रोक लगाने, लोगों को रोजगार मुहैया कराने का लेकिन सत्तासीन होने के तुरंत बाद ही कड़वी दवा पिलाने की बात कर ऐसे ही महंगाई, बेरोजगारी से मर रही आम जनता के ऊपर महंगाई का और एक बोझ लाद दिया है। रेलवे में यात्री किराये-माल भाड़े में बढ़ोतरी की जिसकी वजह से सभी आवश्यक वस्तुओं के दामों में इजाफा होना लाजिमी है। सभी सार्वजनिक क्षेत्रों में एफडीआई लागू करने की बात कह दी जिससे महंगाई और रोजगार के साधनों पर असर पड़ेगा। पी पी पी नीति से निजीकरण को बढ़ावा मिलेगा। शिक्षा एवं चिकित्सा के क्षेत्र में आम लोगों के लिए कोई विशेष कदम नहीं लिए गये। नई नौकरियों के अवसर सृजित करने के किसी कारगर कदम पर चर्चा नहीं है। इस तरह से देखा जाय तो यह स्पष्ट है कि मोदी सरकार ने कांग्रेस की बनायी हुई पूंजीपतिपरस्त जनविरोधी नीतियों को ही आगे बढ़ाने का काम किया है।

आम बजट-2014 मोदी सरकार के झूठे वायदे को बेनकाब करता है। यह जनता के साथ छलावा है। वक्ताओं ने जनता से अपील करते हुए कहा कि दैनंदिन के ज्वलंत सवालों को लेकर जुझारू जनांदोलन ही समस्याओं से मुक्ति का एकमात्र विकल्प है। वक्ताओं में अनामिका, अरूण कुमार, राजेन्द्र राय, अनिल कुमार चांद, बैद्यनाथ शर्मा, सरोज कुमार सुमन, अनिल कुमार आदि थे।

भिवानी : 11 जुलाई को बीजेपी सरकार के पूंजीपतिपरस्त जनविरोधी आम बजट के खिलाफ सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) ने दिनोद गेट से शहर में प्रदर्शन कर अपना रोष जताया और हांसी गेट पर बीजेपी सरकार का पुतला फूंका।

एसयूसीआई(सी) की जिला कमेटी के सदस्यों राजकुमार, धर्मवीर सिंह, राजकुमार बासिया, जिले सिंह, रोहताश के अलावा मनीराम, रूपेश, बिमला, रामफल सहित बड़ी संख्या में लोग प्रदर्शन में शामिल थे। वक्ताओं ने कहा कि एकमात्र जन आन्दोलन के रास्ते ही इस निरंकुश सरकार को जनविरोधी प्रावधानों व नीतियों को भी वापस लेने के लिए मजबूर किया जा सकता है। उन्होंने जोरदार प्रतिरोध आन्दोलन गठित करने के लिए सबका पुरजोर आह्वान किया।

रेवाड़ी : यहां 11 जुलाई को नाई वाला चौक पर बीजेपी सरकार के कारपोरेट घराने की स्वार्थ पूर्ति करने वाले जनविरोधी आम बजट के खिलाफ एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने यहां प्रदर्शन कर अपना रोष जताया और बीजेपी सरकार का पुतला फूंका।

प्रदर्शन में राजबीर सिंह, जयनारायण सहित अनेक

आजीवन क्रान्तिकारी कॉमरेड याकूब पैलान लाल सलाम

एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) केन्द्रीय कमेटी की श्रद्धांजली

''**आवश्यक** उच्च सांस्कृतिक स्तर यानी सर्वहारा सांस्कृतिक स्तर हासिल किए बिना न तो कोई क्रान्ति के सिद्धान्त को समझ सकता है न ही उसके सही-सही मूल्यांकन की क्षमता हासिल कर सकता है। इसी वजह से क्रान्तिकारी राजनीति को सही-सही लागू करने या प्रभावकारी क्रियान्वयन का मतलब है जनता के क्रान्तिकारी संघर्षों में लाखों लाख लोगों को शामिल करते हुए खुद के जीवन को क्रान्ति के अनुकूल ढालना।'' यही है शिक्षा एसयूसीआई(सी) के संस्थापक महासचिव, सर्वहारा के महान नेता और इस युग के अन्यतम मार्क्सवादी चिन्तनकार कॉमरेड शिवदास घोष की। उन्होंने क्रान्ति और क्रान्तिकारी जीवन को एक मिशन के रूप में स्वीकार किया था। 1948 में पार्टी की स्थापना के कुछ ही समय बाद 1949 में प्रथम केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड सचिन बैनर्जी और सुबोध बैनर्जी के सम्पर्क में आने के बाद कॉमरेड याकूब पैलान मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन के प्रति आकर्षित हुए और पार्टी में शामिल किए गए। इसके बाद धीरे-धीरे वे कॉमरेड शिवदास घोष चिन्तन के घनिष्ठ सम्पर्क में आए। कॉमरेड घोष के साथ चर्चाओं के दौरान कॉमरेड याकूब पैलान समझ सके कि मार्क्सवाद-लेनिनवाद-शिवदास घोष चिन्तन ही शोषण से मुक्ति का रास्ता दिखा सकता है।

कॉमरेड याकूब पैलान गरीब किसान परिवार से आए थ। इसलिए अपनी किशोरावस्था और युवावस्था में उन्हें गरीबी का सामना करना पड़ा। इसी वजह से उन्हें औपचारिक शिक्षा हासिल करने का मौका नहीं मिला। लेकिन पार्टी में शामिल होने के बाद उन्होंने समझ लिया कि क्रान्तिकारी सिद्धान्त को समझे बिना एक क्रान्तिकारी के रूप में विकसित होना संभव नहीं है। उन्होंने यह भी समझ लिया था कि सच्चा ज्ञान रचनात्मक होता है। अतः उन्होंने पुराने ग्रामीण जीवन के पिछड़े विचारों और सदियों पुराने मजहबों, गवांरू आदतों, नैतिक आधार और संस्कृति से खुद को मुक्त करते हुए एक नए मनुष्य के रूप में, एक कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी के रूप में अपने को पूरी तरह ढालने के लिए पार्टी की विचारधारा और नेतृत्व के मार्गदर्शन में संघर्ष संचालित किया।।

उस समय जोतदारों और धनी किसानों का सुन्दरबन क्षेत्र के दूरदराज के गाँवों पर दबदबा था। उनके निरंकुश आधिपत्य के चलते बटाईदार किसान निरन्तर भय के वातावरण में रहते थे। इन गरीब बटाईदार किसानों में प्रतिवाद करने का साहस नहीं था। धनी किसान और जोतदार गरीब ग्रामीणों को आर्तकित करते थे उनका दमन करते थे, बटाईदार किसानों को उनके हिस्से से वंचित करते थे, उन्हें बेगार करने के लिए मजबूर करते थे, मछली पालन के लिए तालाब बनाने हेतु खेती योग्य भूमि में नदी का खारा पानी जबरन भर कर उसे बर्बाद कर देते थे और इस तरह गरीबी के मारे किसानों को तबाह कर देते थे। कॉमरेड्स सचिन बैनर्जी और सुबोध बैनर्जी के नेतृत्व में कॉमरेड याकूब पैलान ने गरीब मेहनतकश किसानों को संगठित करते हुए ऐसे दमन और उत्पीड़न के खिलाफ आन्दोलन संगठित किए। मणी नदी के तट पर मछलीपालन-विरोधी आन्दोलन के अगुआ नेताओं में से वे एक थे। वे ऐतिहासिक तेभागा आन्दोलन के भी एक सशक्त नेता थे जो फसलों पर बटाईदार किसानों के एक तिहाई न्यायसंगत अधिकार के लिए हुआ था, जिसने 1950 के दशक की शुरूआत में पश्चिम बंगाल के पूरे दक्षिण 24 परगना जिले को अपनी चपेट में ले लिया था। फसल के एक तिहाई बंटवारे के इस आन्दोलन ने जुझारू चरित्र अख्तियार किया था और जीत हासिल की थी।

वे राज्य में किसानों और खेतिहर मजदूरों के आन्दोलन के एक अत्यंत जनप्रिय नेता थे। ऑल इण्डिया कृषक और खेतमजदूर फेडरेशन के पहले चुने गए सचिव थे। जहाँ वे किसानों की आंख का तारा थे वहीं वे निहित स्वार्थों के लिए आंख की किरकिरी थे। इसी वजह से निहित स्वार्थों ने उन पर बार-बार हमला किया था। वृद्धावस्था में भी वे ऐसे हमलों का शिकार हुए थे। गरीब आम लोगों के आन्दोलन को तोड़ने की खातिर, पुलिस और सरकार ने उन्हें बार-बार निशाना बनाया था और उन्हें यातनाएं दी थी। 1959 के खाद्य आन्दोलन के दौरान साथ ही साथ किसान-खेतिहर मजदूरों के आन्दोलनों के दौरान उन्हें अनेकों बार गिरफ्तार किया गया था।

एक अनवरत समझौताहीन जीवन संघर्ष को संचालित करने के क्रम में कॉमरेड याकूब पैलान ने कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी चरित्र का एक बहुत उँचा स्तर हासिल किया

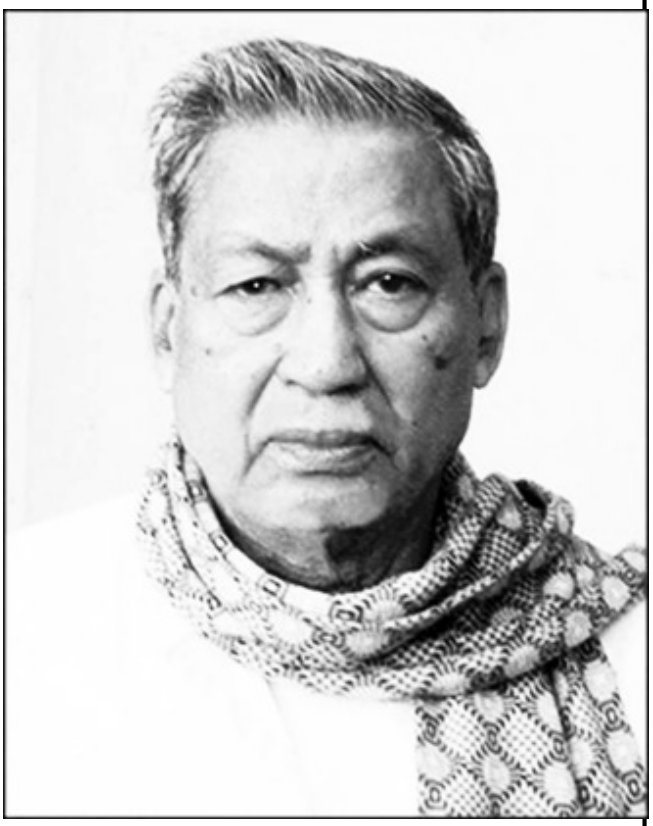

था। जो कोई भी उनके सम्पर्क में आया वह उनकी तरफ गहराई से आकर्षित हुआ। अपने क्रान्तिकारी जीवन में उन्होंने बहुत ऊँचा स्तर प्रतिबिम्बित किया था जिसके चलते न केवल गरीब पददलित लोग बल्कि बहुत से उच्च शिक्षाप्राप्त लोग भी उनकी तरफ आकर्षित हुए थे। उनमें से बहुत से पार्टी के नेता, संगठक और कार्यकर्ता बन गए। इस उदहारणमूलक संघर्ष के चलते ही वे पार्टी के दक्षिण 24 परगना के जिला सचिव और पश्चिम बंगाल राज्य कमेटी के सदस्य चुने गए। 1988 में प्रथम पार्टी कांग्रेस में उन्होंने पार्टी की स्टाफ सदस्यता हासिल की और कण्ट्रोल कमीशन के सदस्य चुने गए और कण्ट्रोल कमीशन के सदस्य के रूप में पुनः निर्वाचित हुए।

कॉमरेड याकूब पैलान अत्यन्त स्नेहशील थे। उन्हें गरीब मेहनतकश जनता से गहरा लगाव था। उन्होंने अपना पूरा जीवन उन्हीं के बीच बिताया। गरीब लोगों के लिए उनके असीम प्यार ने और कॉमरेड शिवदास घोष की क्रान्तिकारी शिक्षाओं की अनवरत उपलब्धि ने उन्हें एक बहुत ही ऊँचे दर्जे का क्रान्तिकारी बना दिया था और वे पार्टी नेता-कार्यकर्ताओं के साथ-साथ आम जनता के हृदय मे भी जगह बना सके थे। वे पार्टी सेण्टर और पार्टी दफ्तर में रहते थे। उनके जीवन में व्यक्तिगत कुछ भी नहीं था और संघर्ष के माध्यम से खुद को इस स्तर तक उठा लिया था जब उनका व्यक्तिगत जीवन पार्टी और क्रान्ति के साथ एकाकार हो गया था। इस प्रक्रिया में उन्होंने बहुत ही उच्च स्तर के पेशेवर क्रान्तिकारी का दर्जा हासिल कर लिया था।

हम शपथ लेते हैं कि उनके निधन से जनवादी जनआन्दोलन और गरीब किसान-खेतीहर मजदूरों के आन्दोलन में जो खला पैदा हुई है उसे कॉमरेड शिवदास घोष की क्रान्तिकारी शिक्षाओं के आधार पर एक आदमी के रूप में हमारे संघर्ष को जारी रखते हुए पूरा करेंगे।

कॉमरेड याकूब पैलान लोगों के दिलों में हमेशा जिन्दा रहेंगे

उस व्यक्ति का नाम जिसके लिए हजारों लोग आज आंसू बहा रहे हैं कभी प्रिण्ट या इलैक्ट्रोनिक मीडिया में स्थान नहीं पा सका। यह महान क्रान्तिकारी दक्षिण 24 परगना जिले के हजारों गरीब किसानों और मेहनतकश लोगों के दिलों में जिन्दा है। वे सभी गहन वेदना में किसी के निधन का शोक मना रहे हैं जो उनके इतने प्रिय थे, इतने आदरणीय थे, जिसे उनका सम्मान और प्यार मिला था, जो उनके हृदय के इतने करीब थे। कैसे ऐसा एक अनजाना, अनसुना आदमी जो एक समय ग्रामीण बाजारों में चावल बेचता था और दर्जी का काम करता था, जो औपचारिक शिक्षा हासिल नहीं कर सका था, इतने सारे लोगों के दिलों में ऐसा एक स्थान बना सका था? वह क्या था जिसने उसे शक्ति प्रदान की और ऐसी एक ऊँचाई हासिल करने में मार्गदर्शन किया? कॉमरेड पैलान के क्रान्तिकारी जीवन की सही समझ इस मूलभूत प्रश्न को सही-सही समझने में निहित है। केवल तभी कोई उनके जीवन से उचित सबक सीख

(शेष पृष्ठ 4 पर)

कॉ. याकूब पैलान को अलविदा कहते हुए कॉ. प्रभाष घोष

22 जून को जयनगर-मंजिलपुर नगर पालिका मैदान में हुई स्मृति सभा का एक अंश। सभा को सम्बोधित करते हुए कॉ. प्रभाष घोष

कॉमरेड याकूब पैलान को हम नहीं भूलेंगे, नहीं भूलेंगे

(पृष्ठ 3 का शेष)

सकता है। एक सच्चा क्रान्तिकारी लाखों अनजान गरीब मेहनतकश लोगों के लिए असीम प्यार से प्रेरित होता है, शोषित-उत्पीड़ित हजारों-हजार लोगों की व्यथा-वेदना से उद्वेलित होता है। इसके साथ जुड़ गई थी ज्ञान की पिपासा जिसने कॉमरेड याकूब पैलान को प्रेरित किया। वे कॉमरेड शिवदास घोष की सफल सृष्टि थे और उन्होंने खुद को आजीवन क्रान्तिकारी सिद्ध किया–इन शब्दों के साथ हमारी पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष ने दिवंगत नेता को 22 जून को पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना के जयनगर स्थित म्यूनिसिपैलिटी ग्राऊण्ड में हुई उनकी स्मरण सभा में भावभीनी श्रद्धांजलि दी थी।

एसयूसीआई(सी) केन्द्रीय कमेटी सदस्य, दक्षिण 24 परगना जिला सचिव, बटाईदार किसानों, गरीब किसानों, खेतिहर मजदूरों और मेहनतकश लोगों के आन्दोलन के प्रसिद्ध नेता, ऐतिहासिक ते-भागा आन्दोलन के बहुचर्चित नेता कॉमरेड याकूब पैलान ने लम्बी बीमारी के बाद कलकत्ता हार्ट क्लीनिक और हॉस्पिटल में 14 जून की सुबह अपनी अन्तिम सांस ली। वे 83 वर्ष के थे। उनके निधन की खबर सुनकर उन्हें श्रद्धांजलि देने के लिए कॉमरेड हस्पताल की तरफ दौड़ पड़े। हस्पताल पर जुटी गमगीन भीड़ के बीच पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष जो उस समय पार्टी मीटिंग के सिलसिले में उड़ीसा गए हुए थे, की ओर से, उपलब्ध पोलिट ब्यूरो सदस्यों और केन्द्रीय कमेटी सदस्यों, राज्य कमेटी सदस्यों, पार्टी कार्यकर्ताओं और हॉस्पिटल स्टाफ तथा डॉक्टरों द्वारा पुष्पांजलि अर्पित की गई। फिर उनका शरीर शवगृह में ले जाया गया। पार्टी ने 14 से 16 जून तक तीन दिन का शोक घोषित किया। इन दिनों में लाल झण्डा आधा झुका कर रखा गया तथा देश भर में कॉमरेडों ने काले बिल्ले लगाए।

उनकी अंतिम यात्रा के दिन 16 जून को पार्टी के केन्द्रीय कार्यालय 48, लेनिन सरणी, कोलकाता के सामने कॉमरेडों की भीड़ इंतजार कर रही थी। लगभग 12 बजे शवगृह से एक अरथी पर रखा कॉमरेड याकूब पैलान का शव वहाँ पहुँचा और कॉमरेडों ने लाल कपड़े से ढके एक ऊँचे मंच पर उनकी अरथी रख दी। आध ` झुके झण्डे हाथ में लिए कॉमसोमोल के कॉमरेड गार्ड़ में सामने खड़े थे। धीरे-धीरे सभी पार्टी नेताओं, संगठकों और कार्यकर्ताओं ने अनुशासित ढंग से उन्हें पुष्पांजली अर्पित की। पार्टी के महासचिव कॉमरेड प्रभाष घोष, कॉमरेड रणजीत धर, कॉमरेड माणिक मुखर्जी और कॉमरेड असित भट्टाचार्य जो सभी पोलिट ब्यूरो सदस्य हैं, कॉमरेड्स देवप्रसाद सरकार, गोपाल कुण्डू, सोमेन बोस, शंकर साहा और छाया मुखर्जी जो सभी केन्द्रीय कमेटी सदस्य हैं, राज्य कमेटी के नेतागण, फ्रण्टल नेतागण और विभिन्न पार्टी यूनिटों के नेतागण श्रद्धांजलि देने वालों में थे। सीपीआई(एम) के राज्य सचिव विमान बसु और राज्य सचिव मंजू कुमार मजूमदार, आरएसपी के राज्य सचिव क्षितिज गोस्वामी, फार्वर्ड ब्लाक के राज्य नेता देवव्रत घोष और सीपीआई(एमएल) लिबरेशन की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कार्तिक पाल ने दिवंगत नेता को पुष्पांजलि अर्पित की। श्रद्धा सुमन अर्पित किए जाने के बाद लाल झण्डों और फूलों से सजी अरथी लेकर कॉमरेड याकूब पैलान की अंन्तिम यात्रा शुरू हुई। सामने 83 आधे झुके झण्डे लिए कॉमरेड चल रहे थे जो उनके संघर्षशील जीवन के वर्षों का द्योतक था और लेनिन सरणी पर अंतिम यात्रा आगे बढ़ी। इसके पीछे एक जुलूस की शक्ल में कॉमरेड मौन जुलूस में आगे बढ़ रहे थे जिनकी संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही थी। सिर्फ अंतर्राष्ट्रीय गीत और सर्वहारा के महान नेता कॉमरेड शिवदास घोष पर रचित गीत की ध्वनि सुनाई दे रही थी। रास्ते में जुलूस पार्टी के ट्रेड यूनियन फ्रण्ट एआईयूटीयूसी के कार्यालय के सामने रुका जहाँ ट्रेड यूनियन नेताओं और कॉमरेडों ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। मोलाली मोड़ पर अन्तिम यात्रा समाप्त हुई। वहाँ से अरथी दक्षिण 24 परगना के जयनगर पार्टी दफ्तर चली गई जहाँ कॉमरेड याकूब पैलान ने किसानों और लोगों के अनेक जोरदार जन आन्दोलनों का नेतृत्व किया था।

दोपहर बाद अरथी जयनगर पार्टी कार्यालय पहुँची। पार्टी के हजारों कार्यकर्ता, समर्थक, हमदर्द और प्रशंसक अनुशासित ढंग से कतारबद्ध होकर अपने प्रिय नेता के अन्तिम दर्शन और उन्हें अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि देने के लिए इंतजार कर रहे थे।

पहले पहल कॉमरेड सचिन बैनर्जी ने दक्षिण 24 परगना के जिले में कॉमरेड शिवदास घोष के क्रान्तिकारी विचारों को फैलाया था। बाद में उनका साथ कॉमरेड सुबोध बैनर्जी ने दिया था। उनके नेतृत्व और मार्गदर्शन में कॉमरेड याकूब पैलान और चन्द अन्य युवा बहादुर जोशीले नौजवानों ने बहुत से रक्तरंजित संघर्षों और कुर्बानियों के जरिए पूरे जिले में पार्टी का आधार तैयार किया था। इसलिए कॉमरेड पैलान के क्रान्तिकारी चरित्र का प्रभाव न केवल दूर दराज के गरीबों से भी गरीब किसानों पर पड़ा था बल्कि जयनगर कस्बे के शिक्षित मध्यम वर्ग पर भी पड़ा था। जो श्रद्धांजलि देने आए थे उनमें कुलतली के गरीब मछुआरे, जयनगर के जाने माने डॉक्टर, मगराहाट के अस्सी साला नागरिक, शंकरपुर के अधेड़ खेतिहर मजदूर शामिल थे। उनमें से बहुतों ने याद किया कि किस प्रकार कॉमरेड पैलान ने तमाम मुश्किलों का सामना करते हुए तमाम बाधाओं को पार करते हुए गरीब किसानों और लोगों को संगठित करने का उदाहरणमूलक संघर्ष छेड़ा था। माल्यार्पण करने वालों में उनके क्रान्तिकारी सहयोद्धा कॉमरेड सुधीर बैनर्जी और नलिनी प्रमाणिक शामिल थे।

जिन्होंने पुष्पांजलि अर्पित की उनमें सीपीआई(एम) के जिला सचिव कॉमरेड सुजान चक्रवर्ती और जोनल सचिव जोगेश घोष, आरएसपी के जिला सचिव चन्द्रशेखर देवनाथ, जयनगर-कुलतली के टीएमसी संयोजक श्री गौड़ सरकार, चेयर पर्सन श्रीमति फरीदा बेगम शेख और जयनगर म्यूनिसिपलटी के पूर्व चेयरमेन श्री प्रसाता सरबेल शामिल थे। कॉमरेडों के एक बड़े समावेश जिसमें राज्य और जिले के नेताओं सहित एसयूसीआई(सी) के राज्य सचिव कॉमरेड सोमेन बसु ने भी अपनी क्रान्तिकारी श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद अंतिम यात्रा शुरू हुई जिसमें पार्टी के हजारों कार्यकर्ताओं, समर्थकों और हमदर्दों ने हिस्सा लिया। ऐसा प्रतीत हुआ जैसे सारा जयनगर सड़कों पर उतर आया है। पूरा जयनगर कस्बा पार करने के बाद अरथी को उनके गाँव हसनपुर ले जाया गया जहाँ आँसुओं और लाल सलाम के बीच उन्हें दफनाया गया।

22 जून को जयनगर म्यूनिसिपल ग्राऊण्ड में उनकी स्मरण सभा आयोजित की गई। पार्टी के केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड देवप्रसाद सरकार ने सभा की अध्यक्षता की। यह शोक संतप्त लोगों का जनसमुद्र था। शोकसंतप्त लेकिन पूरी तरह अनुशासित सभा ने सभी को प्रभावित किया। बहुतों ने पुष्पांजलि अर्पित की। विभिन्न पार्टियों के नेताओं ने भी उनके चित्र पर माल्यार्पण किया। कॉमरेड प्रभाष घोष, रणजीत धर, असित भट्टाचार्य, सोमेन बोस, शंकर साहा व अन्यों द्वारा उनके चित्र पर माल्यार्पण किया गया। कॉमसोमोल के वालण्टियरों द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। कॉमरेड देवप्रसाद सरकार ने केन्द्रीय कमेटी की श्रद्धांजलि पढ़ कर सुनाई। उसके बाद दिवंगत नेता के सम्मान में एक मिनट का मौन रखा गया। भावावेग से अवरुद्ध गले से कॉमरेड प्रभाष घोष ने कॉमरेड याकूब पैलान के क्रान्तिकारी जीवन के विभिन्न पहलुओं और गतिविधियों का वर्णन किया।

अन्तर्राष्ट्रीय गीत के साथ सभा समाप्त हुई। अधूरे रह गए काम को पूरा करने की शपथ के साथ कॉमरेड वहाँ से विदा हुए। यह स्पष्ट था कि कॉमरेड याकूब पैलान सदैव उनके हृदय में जिन्दा रहेंगे।

न्यूटन की कृति 'प्रिन्सिपिया मैथेमैटिका' का ऐतिहासिक महत्व

आईजेक न्यूटन (1642-1727) के प्रसिद्ध ग्रंथ 'फिलॉसफी नेचुरेलिस प्रिन्सिपिया मैथेमिटिका' (जिसका हिन्दी में अनुवाद होता है 'प्राकृतिक दर्शन के गणितीय सूत्र') को प्रकाशित हुए 327 साल बीत चुके हैं। यह 5 जुलाई 1687 में प्रकाशित हुई थी। 'प्रिन्सिपिया' प्रकाशित होने के सवा तीन सौ साल बाद हमें समझ लेना जरूरी है कि इस पुस्तक का सही-सही ऐतिहासिक महत्व क्या है, इस पुस्तक के लिखे जाने की पृष्ठभूमि क्या थी। न्यूटन के बारे में एक धारणा समाज में प्रचलित है, अथवा प्रचलित कर दी गई है कि वे एक समाजविमुख सनकी प्रतिभावान व्यक्ति (एक्सेन्ट्रिक जिनियस) थे। इसलिए हमें पहचान लेना होगा इन्सान न्यूटन को और उनके चिन्तन के स्रोतों को भी।

पुराने चिन्तन से अब काम नहीं चलेगा, नया चिन्तन चाहिए

यह समझ लिया गया था कि इतने दिनों तक जिस तरह से मानव चिन्तन करता आ रहा था उससे अब काम नहीं चलेगा। नये ढंग से चिन्तन करना होगा। इतने दिन से जो जो विश्वास किये गये थे प्रत्येक को जाँचना-परखना होगा। प्रकृति जगत से नया ज्ञान हासिल करना होगा। लेकिन उसकी पद्धति क्या होगी?

पद्धति के प्रश्न पर एक महत्वपूर्ण पहलू गैलिलियो ने दिखाया था। प्राचीनकाल से ही मानव नाना प्रश्नों के उत्तर देने की चेष्टा किया करता था, लेकिन पद्धति थी व्यक्तिमुखी (सब्जेक्टिव)। इस पद्धति से किसी प्रश्न का उत्तर क्या हो सकता है इसको लेकर एक एक चिन्तनशील आदमी गम्भीरता से चिन्तन किया करता था। उनकी चेतना में उत्तर जिस तरह से आ जाता था, उनके पास वही होता था प्रश्न का उत्तर। वे उसका प्रचार कर दिया करते थे। हो सकता है कि दूसरे किसी आदमी ने चिन्तन कर उस प्रश्न का दूसरा ही उत्तर पाया होता। अर्थात् एक ही प्रश्न के बहुत सारे उत्तर हो सकते थे। आम आदमी, ऐसे किसी चिन्तक का अनुगामी हो जाता था, उसके मत पर विश्वास करने वाला हो जाता था। प्राचीन ग्रीक या रोमन युग में या प्राचीन भारत में चिन्तन-चेतना का रूप ऐसा ही कुछ था। गौरतलब है कि कोई चिन्तन सही है या गलत यह जाँच-परख करने का कोई मामला ही नहीं था। गैलिलियो ने पहले पहल कहा कि मैं जो सोचता हूँ, विश्वास करता हूँ, वह गलत भी हो सकता है। चिन्तन सही है या गलत यह जाँच-परख करनी ही होगी प्रकृतिविज्ञान के निरीक्षण-परीक्षण के जरिये। पिसा के झुके हुए मीनार से एक बड़ा और एक छोटा पत्थर का ढेला गिरा कर उन्होंने दिखाया था कि अब तक का यह विश्वास गलत था कि भारी चीज पहले गिरती है, दोनों ही एक साथ धरती पर गिरती हैं। उनके छात्र टोरिसेली का अशरफी और पँख लेकर किये गये प्रयोग की बात तो सर्वविदित है। पेण्डुलम के ऊपर और ढलवां तल पर वस्तुओं की गति के ऊपर प्रयोग करके गैलिलियों ने दिखाया था कि अतीत के बहुत सारे विश्वास ही भ्रांत हैं। इसके द्वारा उन्होंने जिस पद्धति को जन्म दिया उसे कहा जाता है वस्तुमुखी (ऑब्जेक्टिव) पद्धति।

इसका सूत्र पकड़ कर इंग्लैण्ड में फ्रांसिस बेकन(1561-1626) ने कहा कि प्रकृतिजगत के बारे में हमें एकदम नये सिरे से ज्ञान हासिल करना होगा। और उसके लिए चाहिए पूर्वधारणामुक्त मन लेकर व्यापक पर्यवेक्षण। जड़जगत, जीवजगत, ग्रह-नक्षत्रों का व्यापक तौर पर पर्यवेक्षण कर प्रचुर तथ्य जुटाने होंगे। उसके बाद उन तथ्यों से आरोही युक्ति-तर्क (इण्डक्टिव लॉजिक) से आम सत्य निकाल कर सिद्धांत निर्मित करना होगा।

यह काम किसी अकेले एक वैज्ञानिक के द्वारा करना सम्भव नहीं है। बहुत सारे वैज्ञानिकों को सामूहिक तौर पर काम करना होगा। इस चिन्तन के रास्ते चल कर यूरोप के विभिन्न देशों में वैज्ञानिकों के अपने-अपने संगठन, रॉयल सोसाइटी निर्मित हो गये। इंग्लैण्ड की रॉयल सोसाइटी 1666 में बनी थी।

फ्रांसिसी दार्शनिक रेने दकार्ते (1596-1650) ने कहा कि विज्ञान को विश्वास के आधार पर नहीं, बल्कि युक्ति-तर्क के आधार पर खड़ा करना होगा। सही तर्क कर पाना ही सत्य पर पहुँचने का उपाय है। क्योंकि तर्क का सफल प्रयोग गणित के जरिये ही सम्भव है, इसलिए वैज्ञानिक सिद्धांत को गणितीय रूप में ही प्रकट करना होगा। और क्योंकि गणित कुछेक स्वयं सिद्ध सिद्धांतों (एक्सीअम) से अवरोही तर्क (डिडक्टिव लॉजिक) पर आधारित हो कर चलता है, इसलिए उन्होंने अवरोही तर्कधारा के इस्तेमाल पर जोर दिया। उन्होंने खुद कार्तेसीय ज्यामिति को जन्म देकर इस प्रयोग का रास्ता भी दिखाया।

गौरतलब है कि बेकन और दकार्ते ने जो दो कार्यरीति की दिशाएं दी थी वे दोनों ही परस्पर एक दूसरी की परिपूरक थी। दोनों ही विज्ञान की प्रगति के क्षेत्र में अपरिहार्य थी। यह दिशा पा कर विज्ञान बड़ी तेजी से आगे बढ़ा। इसके परवर्तीकाल में ही हम रॉबर्ट बॉयल, रॉबर्ट हुक, ल्युवेनहुक, एडमण्ड हैली और न्यूटन सरीखे दिग्गज वैज्ञानिकों को पाते हैं।

गौरतलब है कि हजारों साल के बांझपन के बाद चिन्तनजगत में अविश्वसनीय तेजी के साथ यह परिवर्तन हुआ था। कोपरनिक्स की किताब 1543 में छपी थी। और, जिस साल गैलिलियो की मृत्यु हुई, उसी 1642 में ही न्यूटन का जन्म हुआ था। अर्थात् एक सौ साल के अर्से में ही समाज के एक तबके के लोगों में युक्ति-तर्क के युग (एज ऑफ रीजन) ने जन्म ले लिया था। लेकिन आम तौर पर जनसाधारण के चिन्तनजगत में उस समय तक भी चर्च का एकछत्र प्रभाव था। वहाँ अंधता, रूढ़िवाद, अंधविश्वास, कूपमण्डुकता का बोलबाला था। यहाँ तक कि केप्लर की अपनी माँ भी डायन होने का झूठा लांछन लगने से जेल में बंद थी। शिक्षित लोगों के एक हिस्से में भी चर्च अनुमोदित ज्ञान के बारे में मात्र सन्देह दिखाई दिया। ''सर्वशक्तिमान ईश्वर विश्वजगत के सबकुछ के सृष्टिकर्ता और नियंत्रक हैं''-इस धारणा में उस समय तक भी दरार नहीं पड़ी थी। विश्वविद्यालय उस समय तक भी शुष्क स्कॉलिस्टिसिज्म (पण्डिताऊपन) चर्चा के केन्द्र थे।

इसी सांस्कृतिक परिमण्डल में न्यूटन का जन्म हुआ और पले बढ़े। समाज के नाना चिन्तनों के घात-प्रतिघात से रसद जुटा कर ही उनका मनन निर्मित हुआ। इस पहलू को ठीक से नहीं समझ पाने के फलस्वरूप कुछ विज्ञान-इतिहासविदों को न्यूटन के धार्मिक विश्वास, कीमियागिरी (ऐल्केमी) आदि को बढ़ा चढ़ा कर दिखाते हुए पाते हैं। दरअसल यही स्वाभाविक था। धार्मिक प्रभाव से मुक्त मनन तैयार होने की वास्तविक जमीन तब तक भी पूरी तरह तैयार नहीं हुई थी। किसी मनुष्य का मूल्यांकन करना होता है उस समाज के आविर्भूत हुए नये अग्रगामी चिन्तन और पुराने पश्चात्गामी चिन्तन-इन दोनों ही तरह के चिन्तनों में से कौन से का उनमें ज्यादा प्रतिफलन हुआ है, उसके आधार पर। इस पहलू से विचार करने से देखा जाएगा कि धार्मिक विश्वास का प्रभाव चाहे उनमें कितना ही क्यों न रहे, जो 'तर्क के युग' का उद्गम हुआ था, उसका उन्नततम व्यक्तिकृत प्रगटीकरण न्यूटन में हुआ।

न्यूटनीय बलविद्या और ईश्वर की भूमिका

न्यूटनीय बलविद्या का मूल वक्तव्य क्या है? न्यूटन से पहले भी मानव देखता आ रहा था वस्तु की गति -सूर्य-चन्द्रमा-ग्रहों की गति, धनुष से छोड़े गये तीर की गति आदि। लेकिन उस गति का कारण मानव को मालूम नहीं था। इसलिए मानव सभी तरह की गतियों के पीछे हमेशा अतिप्राकृत शक्तियों का हाथ देखता था। रथ जैसे सारथी के चलाने से चलता है, उसी तरह लगता था कि सूरज-चाँद की गति ईश्वर के चलाने से है। यहाँ तक कि धनुष से छोड़ा हुआ तीर किधर जाएगा यह ईश्वर के निर्देश से तय होता है। इसके कारण अरस्तू के सिद्धांत के अनुसार माना जाता था कि गति के लिए सर्वदा बलप्रयोग करना होगा। इसलिए गति है तो बलप्रयोग करने वाला भी कोई न कोई है ही।

गैलिलियो ने भी दिखाया कि बल गति पैदा करता है-यह धारणा भ्रांत है, गलत है। बल गति में परिवर्तन में करता है, बल जो सृष्टि करता है उसे हम त्वरण कहते हैं। बल गति पैदा नहीं करता है। इस बात को न्यूटन ने सूत्रबद्ध करके कहा-बाहर से बल प्रयुक्त हुए बिना स्थिर वस्तु स्थिर ही रहेगी, सचल वस्तु समवेग से सरल रेखा में चलती रहेगी। इसका यह मायना हुआ कि गति देखने पर ही हमेशा किसी न किसी बल प्रयोगकारी को मत खोजो, बल्कि गति का परिवर्तन देखो तभी खोजो। जागतिक सब कुछ के परिचालन में ईश्वर की भूमिका यहीं खण्डित हो गई।

फिर, गति का परिवर्तन तो हम अनेक क्षेत्रों में ही देखते हैं। पृथ्वी के चारों ओर चाँद का आवर्तन तो हर पल गति का परिवर्तन ही है। इस क्षेत्र में बल प्रयोग कौन कर रहा है? न्यूटन ने दिखाया कि इस बल का सृजन गुरुत्वाकर्षण की वजह से हो रहा है। यह वस्तुजगत का सर्वजनीन धर्म है, एकदम गणितीय सूत्र में बंधा हुआ है। इसकर मायने है बल प्रयोग भी ईश्वर की इच्छा-अनिच्छा से नहीं होता है। ईश्वर की भूमिका का और भी ह्रास हुआ पाया।

उसके बाद देखा गया कि बल प्रयोग होन पर गति कितनी पल्टेगी, यह भी गणित के सूत्र में बंधा हुआ है। बल है भार और त्वरण के गुणनफल के बराबर। यहाँ से जिस किसी भी वस्तु की गति से सम्बन्धित एक अवकल समीकरण (डिफरेन्शल इक्वेशन) पाया जाता है, जिसे हल पाने से जिस किसी भी प्रारम्भिक अवस्था से शुरू करके भविष्य में उस वस्तु का अवस्थान और गति हिसाब लगा कर निकाला जा सकता है। यह देखा गया कि इस पद्धति से चाँद या ग्रहों की स्थिति किस दिन क्या होगी यह हिसाब लगा कर निकाला जा सकता

(शेष पृष्ठ 7 पर)

एमबीबीएस छात्रा नीरज भड़ाना की बरसी पर प्रदर्शन

हत्यारों को गिरफ्तार करने की फिर उठी मांग

तीर्थंकर महावीर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद में एमबीबीएस की टॉपर छात्र डॉ. नीरज भड़ाना की हास्टल कैम्पस में बलात्कार के बाद नृशंस हत्या तथा हत्यारों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर चलाये जा रहे आन्दोलन के क्रम में 6 जुलाई को नीरज भड़ाना की मृत्यु वार्षिकी पर मुरादाबाद रेलवे स्टेशन से जुलूस निकाल कर, कम्पनी बाग, गांधी मूर्ति पर एक सभा का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कि 6 जुलाई 2013 को टी.एम.यू. कैम्पस हॉस्टल में एमबीबीएस की इस मेधावी छात्रा को बलात्कार के बाद मौत के घाट उतार दिया गया था।

रेलवे स्टेशन पर पहले से मौजूद भारी पुलिस बल ने जुलूस को रोक दिया और पुलिस के उच्चाधिकारियों के साथ मौजूद सिटी मजिस्ट्रेट ने संगठन के नेताओं से जुलूस न निकालने का अनुरोध कर कहा कि कांठ तहसील में साम्प्रदायिक दंगा होने के कारण पूरे जिले में शहर में धारा 144 लगी हुई है। प्रदर्शनकारियों द्वारा विरोध करने पर उन्होंने कहा कि रेलवे स्टेशन पर ही आप सभा कर सकते हैं। इस स्थिति में शहर में जुलूस निकालन का कार्यक्रम स्थगित कर दिया गया और शान्तिपूर्वक गांधी की मूर्ति के सामने रेलवे स्टेशन पर सभा की गई। दो मिनट का मौन धारण करके नीरज भड़ाना को श्रद्धान्जलि अर्पित की गई। माननीय प्रधानमंत्री, भारत सरकार के नाम एक ज्ञापन भी सिटी मजिस्ट्रेट की मार्फत भेजा गया। इसमें मांग की गई कि नीरज भड़ाना के कातिलों को तत्काल गिरफ्तार किया जाए। टी.एम.यू. कैम्पस में हुई सभी ''संदेहास्पद मौतों'' की न्यायिक जांच

मुरादाबाद रेलवे स्टेशन पर प्रदर्शन करते डीवाईओ के कार्यकर्ता

हाईकोर्ट के किसी कार्यरत न्यायधीश से कराई जाये। टी. एम.यू. का सरकार अधिग्रहण कर इसे सरकारी वि.वि. का दर्जा देकर नीरज भड़ाना के नाम पर नामकरण किया जाए। सभी तरह के प्रचार माध्यमों से अश्लीलता, अपसंस्कृति के प्रचार-प्रसार तथा शराब व अन्य नशीले पदार्थों की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया जाए।

रेलवे स्टेशन पर आयोजित सभा की अध्यक्षता एआईडीवाईओ के जिला अध्यक्ष विनोद विग तथा संचालन एआईडीएसओ की जिलाध्यक्ष ऋतु चौधरी ने किया। सभा में सबसे पहले पीड़ित परिवार द्वारा इस आन्दोलन के प्रति आभार व्यक्त करने के लिए अपने भेजे गये संदेश पढ़ कर सुनाये गये। उन्होंने न्याय की इस लड़ाई में मुरादाबाद की जनता तथा सामाजिक संगठनों के इस सहयोग के लिए उनका तहेदिल से शुक्रिया अदा किया।

वक्ताओं ने कहा कि यदि न्याय पाना है तो जुझारू जन आन्दोलन करना होगा, इसके अलावा दूसरा कोई रास्ता नहीं है। उन्होंने ऐलान किया कि यदि नीरज भड़ानों के हत्यारों को बचाया जाता है तो आन्दोलन तेज किया जायेगा। उन्होंने आगे कहा कि सरकार की शिक्षा के निजीकरण की नीतियों के तहत जुआ व लाटरी का कारोबार करने वाला आज एक शिक्षा माफिया बन बैठा है जो सरकारी संरक्षण में निर्दोष छात्र-छात्राओं का हर तरीके से शोषण-उत्पीड़न कर रहा है। इसको सजा मिलनी निहायत जरूरी है।

सभा को जाने माने साहित्यकार, नवगीतकार डॉ. महेश्वर तिवारी, जाने माने चित्रकार व महाराजा हरिश्चन्द्र डिग्री कॉलेज, के कला विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र सिंह, के. जी.के. डिग्री कॉलेज, के प्रोफेसर डॉ. चन्द्रभान यादव, सुखदेवी इन्टर कॉलेज के प्रधानाचार्य परम सिंह, एआईयूटीयूसी के क्षेत्रीय अध्यक्ष मुनीश चन्द्र त्यागी, एआईडीवाईओ के प्रदेश अध्यक्ष हरकिशोर सिंह, कमलेश चाहल, एआईडीएसओ की जिलाध्यक्ष ऋतु चौधरी, एआईडीवाईओ के जिलाध्यक्ष विनोद विग, जिला सचिव मौहम्मद गौरी, राजेन्द्र सिंह, गम्भीर सिंह व साहित्यकार शिशुपाल मधुकर, श्याम सुन्दर, शशिबाला, नबाब अली, रजनी, बबिता सिंह, भाषा तिवारी, महीपाल सिंह आदि ने सम्बोधित किया।

अपनी मांगों के लिए सड़कों पर उतरी मिड डे मील कार्यकर्ता

भिवानी : 7000 रुपये मासिक मानदेय देने, सरकारी कर्मचारी का दर्जा देने, हाजिरी रजिस्टर लगाने, छुट्टियों के पैसे न काटने, सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाया जाने और भविष्य निधि, रिटारमेंट के बाद पेन्शन, जीवन बीमा, मेडिकल भत्ता, आदि सभी सुविधाएं प्रदान करने, साल में कम से कम दो वर्दियां देने, बीमार पड़ने पर सवेतन अवकाश और मृत्यु या दुर्घटना होने पर उचित मुआवजा देने, रसोई घर में सुरक्षा के पुख्ता प्रबंध और गैस सिलेण्डरों व अन्य जरूरी सामानों का प्रबंध करने, मिड डे मील स्कीम को प्राइवेट कम्पनियों या ठेकेदारों के हवाले न करने की माँगों पर ऑल इण्डिया यूटीयूसी से सम्बद्ध मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन के बैनर तले 8 जुलाई को मिड डे मील कार्यकर्ताओं ने यहाँ लघुसचिवालय पर प्रदर्शन किया और उपायुक्त जिला भिवानी की मार्फत मुख्यमंत्री, हरियाणा सरकार के नाम एक ज्ञापन सौंपा।

प्रदर्शन से पहले मिड डे मील कार्यकर्ता हाथों में माँग पट्टिकाएं लिए हुए नारे लगाती हुई लघु सचिवालय पहुँची। वहाँ गेट पर जुलूस सभा में बदल गया।

सभा को ऑल इण्डिया यूटीयूसी की जिला कमेटी सदस्यों राजकुमार व धर्मवीर सिंह और मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन की नेत्री राजबाला ने सम्बोधित किया। वक्ताओं ने मिड डे मील कार्यकर्ताओं को अपनी मांगों के लिए आन्दोलन तेज करने का आह्वान करते हुए

भिवानी में लघुसचिवालय पर मिड डे मील कार्यकर्ता यूनियन के बैनर तले जुटे प्रदर्शनकारी

कहा कि आन्दोलन के सिवाय और कोई विकल्प नहीं है। प्रदर्शन में मीरा देवराला, राजबाला, संतोष, दर्शना, पिंकी, सुषमा सहित आदि अनेक मिड डे मील कार्यकर्ता शामिल थीं।

झारखण्ड राज्य के जमशेदपुर में जलापूर्ति की मांग को लेकर एसयूसीआई (सी) कार्यकर्ताओं ने 7 जून को डी एम कार्यालय पर प्रदर्शन किया और पानी की समस्या बारे पार्टी का प्रतिनिधिमण्डल उनसे मिला।

सागर में शैक्षणिक कक्षा का आयोजन

मध्य प्रदेश में नौजवानों के संगठन ऑल इण्डिया डेमोक्रेटिक यूथ ऑर्गेनाइजेशन (एआईडीवाईओ), सागर इकाई की ओर से एक शैक्षणिक कक्षा का आयोजन किया गया। इसमे विचारणीय विषय थे नौजवानों की समस्याएं, बेरोजगारी, महंगाई, अपसंस्कृति, नशाखोरी और महिलाओं पर बढ़ते अत्याचार। इसमें कॉ. लोकेश शर्मा, रामअवतार शर्मा, एसयूसीआई(सी) के कॉ. उमाप्रसाद विश्वास ने अपने विचार रखे।

कॉ. शिवदास घोष...

(पृष्ठ 1 का शेष)

अधिकाधिक संकट बढ़ते जा रहे हैं। बढ़ते जा रहे पूंजीवादी संकट और मेहनतकश लोगों पर हो रहे अभूतपूर्व हमले की वजह से सभी देशों की जनता बार-बार सड़कों पर उतर रही है। कभी वे अपनी-अपनी सरकारों के खिलाफ लड़ रहे होते हैं, जबकि कभी यह जानने में असमर्थ होने के कारण कि उनकी असहनीय दुख-तकलीफों का मूल कारण पूंजीपति-साम्राज्यवादियों का बेरहम शोषण है, वे सही क्रान्तिकारी नेतृत्व की अनुपस्थिति में आपसी झगड़े-फसादों और भ्रातृघाती हत्याकाण्डों में उलझते जा रहे हैं।

विस्फोटक आर्थिक स्थिति की अपनी हूबहू झलक राजनीति के क्षेत्र में भी मिल रही है। राजनीति एक तरफ मुट्ठीभर चंद पूंजीपतियों के लिए बेशुमार धन-दौलत बटोरना सुनिश्चित करने का हथियार बन गई है और दूसरी तरफ व्यवस्था के खिलाफ लोगों की बगावत को होने से रोकने, उसका गला घोंटने और इस प्रकार उसकी बती बुझा देने के इरादे से लोगों के गले का फंदा बन गई है।

आदमी में कुप्रवृत्तियों को उकसा कर सही संस्कृति को अंकुर में ही नष्ट किया जा रहा है ताकि लोगों में जो भी थोड़ी-बहुत मानवीय संवेदनशीलता और मान-मर्यादा बची हुई है उससे भी उन्हें वंचित किया जा सके और वे इन्सान कहलाने लायक ही न रह सकें और इस प्रकार लोगों का अमानवीयकरण कर देना।

हमारे देश में भी हालात इससे कोई अलहदा नहीं हैं। 1947 से ही, पूंजीवादी शासन जो कि देश की छाती पर भारी बोझ की तरह पसरा पड़ा है, देश में फासीवाद कायम करने की अपनी योजनाओं और रूपरेखाओं के साथ अब अपने सभी पंजे और दांत और भी आक्रामकता के साथ और खूँख्वार रूप में प्रकट कर रहा है। अभी हाल ही में हुए लोकसभा चुनावों में घोर साम्प्रदायिक ताकत बीजेपी के सत्तासीन हो जाने और इसके तुरंत बाद इसकी सरकार के कार्यकलापों और नीतिगत घोषणाओं से और भी फासीवादी रुझानों की बू आ रही है जो लोगों के लिए गंभीर खतरे का पूर्वाभास देते हैं। यह बीजेपी और इसके भरोसेमंद सलाहकार आरएसएस के हाथ साम्प्रदायिक खून से सने हैं जिन्होंने मिल कर गुजरात नरसंहार रचवाया और अंजाम दिया और हाल ही में जिन्होंने शातिर दिमाग से मुजफ्फरनगर दंगों की योजना बनाई, अगर उन्हें उनके घिनौने षड्यंत्र को जारी रहने दिया गया तो ये देश को कब्रिस्तान में तब्दील कर देने पर आमादा हैं। इन प्रतिक्रियावादी ताकतों का बोलबाला इसलिए हो गया है कि सीपीआई(एम), सीपीआई जैसे नकली मार्क्सवादियों द्वारा अपनायी गई आत्मसमर्पणकारी और घुटने टेक नीति की बदौलत देश में वाम-जनवादी आन्दोलन नदारद है।

ऐसी एक विस्फोटक राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय परिस्थिति की पृष्ठभूमि में हम 5 अगस्त 2014 को अपने महान शिक्षक, पथप्रदर्शक और इस युग के महान मार्क्सवादी अॅथोरिटी कॉमरेड शिवदास घोष की 38वीं मृत्यु वार्षिकी मनाने जा रहे हैं। यह दिन हमारे पूरे पार्टी जीवन में सबसे ज्यादा दुखद दिन होने से, इस दिन हम सब नेता, कार्यकर्ता, समर्थक, हमदर्द एक साथ मिल कर उनके क्रान्तिकारी चिन्तन, लक्ष्य और आदेशों के प्रति अपने आपको पुनःसमर्पित करने, जैसा कि उन्होंने सोचा था और आह्वान किया था उसी तरह वर्ग संघर्ष और जनसंघर्षों को जारी रखने की शपथ लेते हैं, उनके उदाहरणीय आजीवन संघर्ष से उनके द्वारा जिस क्रान्ति की रूपरेखा प्रस्तुत की गई और बुलंद की गई उसकी प्रक्रिया को तेज करने और सर्वहारा वर्ग की पार्टी एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) को मजबूत करने के लिए हम खुद को समर्पित और पुनःसमर्पित करने के लिए प्रतिबद्ध होंगे।

न्यूटन की कृति...

(पृष्ठ 5 का शेष)

है, और वह भविष्यवाणी मेल भी खा रही है। यहाँ तक कि न्यूटन की जीवित अवस्था में ही उनके दोस्त एडमण्ड हैली ने एक धूमकेतु पर यह तरीका इस्तेमाल करके बता दिया था कि यह धूमकेतु 75 साल बाद फिर लौट कर आयेगा। इतने दिनों बाद न्यूटन या हैली कोई भी जिन्दा नहीं था। हैली का धूमकेतु दोबारा फिर लौट कर आया था।

इसका अर्थ है, ग्रह-नक्षत्रों के चलने में भी ईश्वर का कोई हाथ नहीं होता। मानव ही हिसाब लगा कर बता दे सकता है कि आगामी दिनों कौन किस जगह होगा। धनुष से छोड़े गये तीर या तोप से छोड़े गये गोले की गति की तो बात ही छोड़ो। उनका चलन-पथ होगा पैरेबल (अधिवृत्तीय), हवा की बाधा से उस पथ से केवल मामूली भटकाव हो सकता है। कितना होगा, यह भी दिखा गये हैं न्यूटन ही। अर्थात् गति के किसी भी क्रम में ईश्वर की दखलअंदाजी का कोई भी मौका नहीं रहा।

लम्बे अर्से तक भाववाद के प्रबल आधिपत्य में राहुग्रस्त रहने के बाद फिर से मानव के चिन्तन क्षेत्र में लौट आया था वस्तुवाद। न्यूटनीय विज्ञान के प्रत्यक्ष प्रभाव में ही प्रिन्सिपिया मैथेमेटिका का ऐतिहासिक महत्व यहीं पर है।

द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद आने पर ईश्वर की भूमिका चली गई

हालाँकि धर्मीय चिन्तन का प्रभाव तब तक भी समाज में प्रबल था। ईश्वर की भूमिका इस तरह महत्वहीन हो जाना बहुतेरे लोग मन से नहीं मान पाये। उन्होंने कहा कि कोई भी वस्तु गतिशील हो तो वह चिरकाल तक गतिशील रहेगी कि नहीं यह बात तो चलो मान ली। लेकिन पहली बार गति पैदा किसने की? पहला धक्का किसने दिया? उन्होंने कहा कि यह काम ईश्वर ने किया। इसी तरह आई थी प्राइम मूवर की धारणा। अपने धार्मिक विश्वास के फलस्वरूप न्यूटन ने खुद भी इस मत का समर्थन किया था। यह थी उस युग की सीमाबद्धता, सम्पूर्ण धार्मिक प्रभाव से मुक्त विश्वदर्शन पैदा होने की जमीन तब तक तैयार नहीं हुई थी। वह हुई 19वीं शताब्दी में आकर। तब तक विज्ञान के जो आविष्कार हुए थे उनके आधार पर खड़े हो कर मार्क्स और एंगेल्स ने कहा था, 'एक समय वस्तु थी गतिहीन, इसके बाद एक समय उसमें गति का संचार हुआ'–इस तरह सोचना अवैज्ञानिक है। वस्तु सदा से ही गतिशील है। वस्तु है मायने ही है वह गति में ही है। विशिष्ट मार्क्सवादी दार्शनिक कॉमरेड शिवदास घोष ने एंगेल्स की शिक्षाओं से कहा, ''मोशन इज दि माकड ऑफ एग्जिस्टन्स ऑफ मैटर'' (गति है वस्तु के अस्तित्व की विधि)।

न्यूटनीय विज्ञान से सूर्य-चन्द्र-ग्रह-तारों की गति के रूप सामने आये, वे बन गये गणितीय सूत्रों के नियम में बंधे एक यान्त्रिक रूप। गतिसूत्र के नियम मान कर ही निर्दिष्ट कक्षापथ पर ये घूम रहे हैं, वैसे ही जैसे घड़ी की सूइयाँ निश्चित गति से घूम रहती हैं। लगता है कि पूरा विश्वब्रह्माण्ड ही एक विशाल यंत्र है। प्रत्येक विशेष वस्तु की गति उस विशाल यंत्र के पुर्जे की तरह ही है, जिसका जो काम है वह अपना काम करता जा रहा है। इस सोच से जो चिन्तनधारा पैदा हुई वह वस्तुवादी अवश्य ही है –उस अर्थ में उसने प्रचलित नाना भ्रांत धारणाओ से मुक्त होने में मदद की है–लेकिन उसका रूप था यांत्रिक।

इस यांत्रिक वस्तुवाद के प्रभाव में परवर्तीकाल में अनेक वैज्ञानिकों ने जीवजन्तुओं, यहाँ तक कि मनुष्य को भी एक यंत्र के हिसाब से देखा। सही वस्तुवादी दर्शन उभर कर आने का इंतजार और भी डेढ़ सौ साल करना पड़ा। हेगेल-डारविन के रास्ते चल कर मार्क्स-एंगेल्स ने द्वन्द्वात्मक वस्तुवाद को जन्म दिया।

अतः देखा जाता है कि न्यूटन की कृति 'प्रिन्सिपिया मैथेमेटिका' मानव के चिन्तन की प्रगति पथ पर एक महत्वपूर्ण छलांग थी। प्रिन्सिपिया आने से पहले मानव का चिन्तन और उसके बाद मानव के चिन्तन के बीच बड़ा भारी फर्क है। आज हमारे विश्व इतिहास की इस छलांग को पहचान लेना होगा, और उस जमाने की ऐतिहासिक सीमाबद्धता को पार कर सही विज्ञान-दर्शन को भी पहचान लेना होगा।

जनविरोधी केन्द्रीय बजट...

(पृष्ठ 2 का शेष)

लोग प्रदर्शन में शामिल थे।

झज्जर : यहां 12 जुलाई को प्रदर्शन कर और अम्बेडकर चौक पर बीजेपी सरकार का पुतला फूंक कर जनविरोधी आम बजट के खिलाफ एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने अपना रोष जताया। पुतला फूंकने और बीजेपी सरकार के खिलाफ नारे लगाने वालों में जिला कमेटी सदस्य कॉ. जयकरण, जिलेसिंह, धनराज के अलावा कॉमरेड करतार सिंह अच्छेज, राजकुमार, रिसाल सिंह, भीम सिंह, रामबड़ाई, सतीश आदि कई कार्यकर्ता शामिल थे।

नारनौल: एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने यहां 11 जुलाई को बजट के खिलाफ रोष प्रदर्शन किया और महावीर चौक पर बीजेपी सरकार का पुतला फूंका और बीजेपी सरकार के खिलाफ नारे लगाये। इस अवसर पर कॉ. शेरसिंह, सुभाषचंद, सतीश कुमार, सीताराम, भीम सेन, अमर सिंह आदि कई कार्यकर्ता शामिल थे।

रोहतक: एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने यहां 11 जुलाई को बजट के खिलाफ रोष प्रदर्शन किया और छोटूराम चौक पर बीजेपी सरकार का पुतला फूंका और बीजेपी सरकार के खिलाफ नारे लगाये। इस अवसर पर कॉ. जयकरण, रामपत, राजकुमार, आदि कई कार्यकर्ता शामिल थे।

सोनीपत: एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) ने यहां 11 जुलाई को बजट के खिलाफ रोष प्रदर्शन किया और रेलवे स्टेशन पर बीजेपी-नीत एनडीए सरकार का पुतला फूंका। जुलूस का नेतृत्व कॉ. रामकरण और इन्द्र सिंह कर रहे थे।

ढांड : हरियाणा के जिला कैथल के ढांड कस्बे में 12 जुलाई को बीजेपी सरकार के पूंजीपतिपरस्त जनविरोधी आम बजट के खिलाफ एसयूसीआई (कम्युनिस्ट) ने प्रदर्शन कर अपना रोष जताया और बीजेपी सरकार का पुतला फूंका।

एसयूसीआई(सी) की जिला कमेटी के सदस्य राजकुमार, बाबूराम, रामसरूप, नन्दलाल व सुभाषचंद भी प्रदर्शन में शामिल थे। वक्ताओं ने कहा कि एकमात्र जन आन्दोलन के रास्ते ही इस निरंकुश सरकार को जनविरोधी प्रावधानों व नीतियों को भी वापस लेने के लिए मजबूर किया जा सकता है।

R.N.I. No.- 43022/85
P.R.No.-DL(C)-01/1123/2012-2014
Posting at IPMBC on 7–8 and 22–23 Fortnightly, Date of Printing :20 July, 2014

मुम्बई में मनाया गया डीवाईओ स्थापना दिवस

29 जून को एआईडीवाईओ, मुम्बई-थाने इकाई ने संघर्ष नगर, चांदीवली, अन्धेरी(पूर्व), मुम्बई में एआईडीवाईओ स्थापना दिवस मनाया। कार्यक्रम में काफी नौजवानों सहित आम लोगों ने शिरकत की। एसयूसीआई (सी), मुम्बई-थाने सांगठनिक कमेटी के सदस्य कॉ. कुमार कुलश्रेष्ठ ने सभास्थल पर बनाई गई शहीद यादगार वेदी पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजली दी।

एआईडीवाईओ के संगठक कॉ जयराम विश्वकर्मा सभा के मुख्य वक्ता थे। जानेमाने आर्कियोलोजिस्ट, इतिहासकार व जनचिंतक मयूर ठाकरे मुख्य अतिथि थे। जाने-अनजाने शहीदों को श्रद्धांजली देने और क्रान्तिकारी गीत गाने के बाद एआईडीवाईओ मुम्बई के सचिव कॉ. दत्तु काजले ने संगठन के विभिन्न पहलुओं, इसकी स्थापना और मौजूदा हालात में इसकी क्रान्तिकारी भूमिका पर अपनी बात रखी। कॉ छोटेलाल, डीएसओ सदस्यों रूपेश काम्बले व गोविन्द मौर्य, हीरे जवाहरात वर्कर्स यूनियन के अरुण मिश्रा ने भी अपने विचार रखे।

मयूर ठाकरे ने मौजूदा हालात में दिखाया कि भारत सहित अमेरिका आदि देशों में पूंजीवाद नौजवानों पर कैसे बुरे प्रभाव डाल रहा है। उन्होंने नौजवानों को शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, चन्द्रशेखर आजाद, राजगुरु, सुखदेव आदि देश के आजादी आन्दोलन की समझौताहीन क्रान्तिकारी धारा के शहीदों से प्रेरणा लेने की जरूरत बतायी और न्यायसंगत व शोषणमुक्त समाज बनाने के उनके अधूरे सपने को पूरा करने के लिए आगे आने पर बल दिया। सभा की अध्यक्षता एआईडीवाई को कॉ. मनोज ने की तथा संचालन कॉ. हसन ने किया।

कर्नाटक में आशा कर्मियों की जीत

दीर्घस्थायी आन्दोलन के जरिये हाल ही में काफी सारी मांगें कर्नाटक की आशा कर्मियों ने हासिल की हैं। राज्य के स्वास्थ्य विभाग में लगभग 30 हजार आशा कर्मियों को प्रशिक्षण देकर नियुक्त किया गया है। गत 6-7 सालों से वे केन्द्रीय सरकार के 'नेशनल रूरल हैल्थ मिशन' (एनआरएचएम) के तहत कर्नाटक के सभी जिलों के ग्रामीण क्षेत्रों में कार्यरत हैं।

ऑल इण्डिया यूटीयूसी से सम्बद्ध 'आशा' कर्मियों की यूनियन ने पिछले 5-6 साल से पूरे राज्य भर में कई सफल आन्दोलन लगातार किये हैं। समाज के विभिन्न तबके के जाने माने लोगों ने भी इनके आन्दोलन का समर्थन किया है। आशा यूनियन के इन लगातार आन्दोलनों के दबाव से ही पिछले साल कर्नाटक राज्य सरकार ने अपने प्रथम बजट सत्र में 'आशा कर्मियों' को राज्य की तरफ से केन्द्र के बराबर इन्सेन्टिव देने की घोषणा करनी पड़ी थी। लेकिन 2013-14 के बजट में कर्नाटक के मुख्यमंत्री ने यह वायदा करने के बावजूद 4-5 महीने से कोई इन्सेन्टिव नहीं दिया।

आशा यूनियन के राज्य नेतृत्व की ओर से प्रतिनिधि कई बार सरकार के पास गये। आखिरकार गत 18 जून को स्वास्थ्यमंत्री यू टी खादेर से यूनियन का एक प्रतिनिधिमण्डल मिला। उनसे हुई वार्ता के जरिये मासिक इन्सेन्टिव, आशा कर्मियों को मोबाइल और सिमकार्ड प्रदान करने सहित कई मांगें मान लेने पर सरकार बाध्य हुई। अन्य प्रतिनिधियों के अलावा आशा कर्मियों की यूनियन की महासचिव डी. नागलक्ष्मी और ऑल इण्डिया यूटीयूसी के उपाध्यक्ष एम एन श्रीराम इस प्रतिनिधिमण्डल में शामिल थे। कर्नाटक राज्य सरकार ने केन्द्र की ओर से दिये जाने वाला इन्सन्टिव बढ़ाने का भी आग्रह किया है और राज्य में भी उसके बराबर भत्ता देने की घोषणा की है।

राजनीतिक शिक्षण शिविर आयोजित

शिक्षण शिविर का संचालन करते हुए एसयूसीआई(कम्युनिस्ट), केन्द्रीय कमेटी सदस्य कॉमरेड सत्यवान

भिवानी (हरियाणा) : एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) द्वारा 28-29 जून को स्थानीय जांगड़ा धर्मशाला में एक राजनीति शिक्षण शिविर लगाया गया। शिक्षण शिविर का संचालन एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) की केन्द्रीय कमेटी के सदस्य कॉमरेड सत्यवान ने किया।

शिविर में मार्क्सवाद, द्वन्द्वात्मक ऐतिहासिक भौतिकवाद, पार्टी संगठन के कई पहलुओं पर कॉमरेड सत्यवान ने विस्तार से चर्चा की। पार्टी के जिला सचिव व राज्य कमेटी सदस्य कॉमरेड रामफल भी शिक्षण शिविर में उपस्थित रही। पार्टी व इसके जनसंगठनों के बहुत सारे कार्यकर्ताओं और छात्र-नौजवानों ने शिक्षण शिविर में शिरकत की।

इन्दौर में मेडिकल कैम्प आयोजित

15 जुलाई को शहीद भगत सिंह यादगार मंच और मेडिकल सर्विस सेण्टर की ओर से इन्दौर के एक पिछड़े इलाके में एक नि:शुल्क मेडिकल कैम्प लगाया गया। इसमें शहर के सीनियर सर्जन, आई सर्जन और नर्सिंग स्टाफ ने अपना सहयोग दिया। शहर के 200-250 लोगों ने कैम्प में मेडिकल चैक अप करवाया।

ब्यास नदी में डूब कर मरे इंजीनियरिंग के छात्रों को हैदराबाद में 13 जून को मोमबती जला कर श्रद्धांजली देते हुए एआईडीएसओ-एआईडीवाईओ के कार्यकर्ता

एआईडीएसओ का दो दिवसीय शिक्षण कैम्प

नई दिल्ली: एआईडीएसओ की दिल्ली राज्य कमेटी की ओर से एक दो-दिवसीय शिक्षण कैम्प 22-23 जून को नार्थ एवेन्यू में आयोजित किया गया। कैम्प की शुरूआत एआईडीएसओ के संस्थापक कॉ. शिवदास घोष के चित्र पर पुष्पार्पण से की गई। कैम्प में दिल्ली के विभिन्न इलाकों से आए अनेक छात्रों ने हिस्सा लिया। 'क्या छात्रों को राजनीति करनी चाहिए' नामक पुस्तक का अध्ययन सभी करके आए थे। एसयूसीआई(सी) के दिल्ली राज्य सचिव कॉ प्रताप सामल ने कैम्प के महत्व व मौजूदा स्थिति में छात्रों की भूमिका पर अपनी बात रखी। इसके बाद किताब पर आधारित सवालों पर चर्चा की गई। कैम्प में एआईडीएसओ के महासचिव कॉ अशोक मिश्रा ने छात्रों के सवालों के जवाब देते हुए छात्र जीवन में राजनीति के महत्व पर चर्चा की।

अन्त में मुख्य वक्ता के रूप में एसयूसीआई (सी) के पोलिट ब्यूरो सदस्य कॉमरेड कृष्ण चक्रवर्ती ने सामाजिक विकास क्रम को समझाते हुए विभिन्न राजनैतिक मुद्दों पर रोशनी डाली। कैम्प के दौरान चार्ली चैपलिन की ''लाइम लाइट'' नामक फिल्म दिखाई गई। शिविर के दूसरे दिन पार्क में व्यायाम और खेलकूद जैसी गतिविधियाँ भी संचालित की गई। शिविर का सम्पूर्ण संचालन एआईडीएसओ के दिल्ली अध्यक्ष और सचिव कॉ. भास्कारानन्द एवं कॉ. प्रशांत कुमार ने किया। कैम्प का समापन कॉ. शिवदास पर रचित गीत से किया गया।

पेट्रोल के दामों में बढ़ोतरी के खिलाफ ओडिशा राज्य के कटक शहर में 1 जुलाई को प्रदर्शन करते हुए एसयूसीआई(कम्युनिस्ट) के कार्यकर्ता

सोशलिस्ट यूनिटी सेन्टर ऑफ इण्डिया (कम्युनिस्ट) की ओर से कॉ. सत्यवान द्वारा 3ए/38, डब्ल्यू.ई.ए., करोल बाग, नई दिल्ली-5 से संपादित व प्रकाशित तथा परम्परा प्रिंटिंग प्रेस, बी-70/83, इण्डस्ट्रियल एरिया, लॉरेंस रोड, दिल्ली-35 से मुद्रित, दूरभाष:011-25726631, Email: sarvaharadrishtikon@gmail.com; sarvaharadrishtikon@yahoo.com